

प्रज्ञा

मैत्री

करुणा



तथागत बुद्ध और उनके विचार

जन्म	: 563 ईसा पूर्व बैशाख पूर्णिमा
जन्म स्थान	: लुम्बिनी (कपिलवस्तु)
माता	: महामाया
पिता	: शुद्धोधन
ज्ञान प्राप्ति	: बौद्ध गया (बिहार) बैशाख पूर्णिमा
महापरिनिर्वाण	: कुशी नगर 483 ईसा पूर्व बैशाख पूर्णिमा

महाकारुणिक, महामानव तथागत बुद्ध का जन्म 563 ईसा पूर्व कपिलवस्तु के लुम्बिनी में बैशाख पूर्णिमा के दिन शुद्धोधन के घर माता महामाया की कोख से हुआ। उनका बचपन का नाम सिद्धार्थ गौतम था। 16 वर्ष की युवावस्था में उनका विवाह यशोधरा से हुआ। पिता शुद्धोधन प्रसन्न थे कि पुत्र का विवाह हो गया और वह गृहस्थ बन गए।

घर छोड़ने का कारण : बुद्ध के वंश का नाम शाक्य था। शाक्यों का अपना संघ था। नियमानुसार, 20 वर्ष की उम्र पूरी करने के बाद सिद्धार्थ शाक्य संघ के सदस्य बने। रोहिणी नदी जो शाक्यों और कोलियों की विभाजक रेखा थी, को लेकर झगड़ा हो गया। दोनों पक्ष युद्ध की तैयारी करने लगे। सिद्धार्थ ने युद्ध का विरोध किया। यह विरोध ही उनके घर छोड़ने का कारण बना। सिद्धार्थ के पुत्र राहुल 7 वर्ष के थे तब अपने माता-पिता और पत्नी से विचार-विमर्श कर और अनुमति लेकर उन्होंने 29 वर्ष की आयु में घर छोड़ दिया।

सत्य की खोज में सिद्धार्थ ने समाज में प्रचलित सभी पद्धतियों का अध्ययन किया। अध्ययन के पश्चात उन सभी पद्धतियों को व्यर्थ माना और उनको नकार दिया। बुद्धि से उन्होंने जान लिया कि उनके सामने दो समस्याएं हैं—पहली समस्या यह थी कि संसार में दुख है और दूसरी समस्या थी कि किस प्रकार दुख का अंत किया जाए और मानव को कैसे सुखी बनाया जाए।

सम्यक सम्बुद्ध : सिद्धार्थ ने शरीर को अत्यधिक कष्ट देकर तपस्या आरंभ की। उन्होंने जल्दी ही जान लिया कि शरीर को कष्ट देने की बजाए शरीर को संभालकर मन की साधना से ही लाभ होगा। यह सोचकर वे निर्जना, नदी में स्नान करने आए। नदी से बाहर निकलकर चलने लगे तो उनकी साँस उखड़ने लगी। वे बेहोश हो गए। उसी समय ग्वालापुत्री सुजाता दूध-खीर लेकर वन देवता को अर्पण करने आई थी। अकस्मात्, सुजाता ने सिद्धार्थ को अर्द्ध-बेहोशी की हालत में पीपल के वृक्ष के नीचे देखा। उसने सिद्धार्थ को पानी और कटोरा भर दूध पिलाया। इससे उनमें शक्ति आई। वे उठकर बैठे। फिर उन्होंने खीर ग्रहण की। खीर ग्रहण करने के पश्चात वे पीपल के वृक्ष के नीचे ध्यान में बैठे। यहीं ध्यान की अवस्था में ही उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। अब सिद्धार्थ सम्यक सम्बुद्ध हुए।

धम्मचक्र प्रवर्तन: ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात तथागत ने सबसे पहला उपदेश सारनाथ (बनारस के निकट) में दिया। यह उपदेश उन्होंने अपने पुराने पाँच साथियों को दिया। उन्होंने इसमें चार महान सत्य, पंचशील, अष्टांगिक मार्ग और पारमिताओं के विषय में विस्तार से बताया। यह प्रथम उपदेश धम्मचक्र प्रवर्तन कहलाया। तथागत के सभी उपदेश और बौद्ध धम्म का साहित्य सुत्तपिटक, विनयपिटक, अभिधम्मपिटक में संगृहीत है और ये तीनों तिपिटक में संगृहीत हैं।

तथागत बुद्ध के चार महान सत्य :

1. संसार में दुख है।
2. दुख का कोई न कोई कारण अवश्य है।
3. दुख का निवारण (अंत) अवश्य है।
4. दुख निवारण का मार्ग है अर्थात् अष्टांगिक मार्ग है। अष्टांगिक मार्ग ही मध्यम मार्ग कहलाता है।

तथागत बुद्ध ने जीवन के माप-दण्ड बनाए जिससे व्यक्ति अपनी अच्छाई-बुराई को माप सके। उनके अनुसार त्रि-शरण और पंचशील जीवन के मापदंड हैं।

त्रि-शरण:

बुद्ध शरणं गच्छामि। (ज्ञान की शरण में जाना)

धम्मं शरणं गच्छामि। (बौद्ध धम्म की शिक्षाओं के अनुसार आचरण करना)

संघं शरणं गच्छामि। (सभा, समुदाय और संगठन की शरण में जाना)

पंचशील:

- (1) अकारण प्राणी हिंसा ना करना।
- (2) चोरी ना करना।
- (3) व्यभिचार ना करना।
- (4) झूठ ना बोलना।
- (5) नशीले पदार्थों का सेवन ना करना।

अष्टांगिक मार्ग :

बुद्ध ने जीवन को उन्नत करने के लिए अष्टांगिक मार्ग (आठ मार्ग) बताए।

1. **सम्यक दृष्टि :** अंधविश्वास और अलौकिकता का त्याग करना। ऐसी मिथ्या धारणाओं का त्याग करना जो कल्पना मात्र हैं और जो सच अथवा अनुभव पर आधारित नहीं हैं। सम्यक दृष्टि के लिए स्वतंत्र मन और स्वतंत्र विचार आवश्यक होते हैं।
2. **सम्यक संकल्प :** हर मनुष्य के उद्देश्य, आकांक्षाएँ और महत्वाकांक्षाएँ उच्च स्तर की एवं सराहनीय हों, निम्न स्तर की और निंदनीय ना हों।
3. **सम्यक वाणी :** मनुष्य केवल वही बोले जो सत्य है। मनुष्य असत्य ना बोले। मनुष्य दूसरों की बुराई ना करे। मनुष्य की वाणी बुद्धि-संगत और सार्थक होनी चाहिए।
4. **सम्यक कर्मांत :** हमारे कार्य का आधार दूसरों की भावनाओं और अधिकारों का आदर होना चाहिए।
5. **सम्यक आजीविका :** इंसान बिना किसी को हानि पहुंचाए अथवा बिना किसी के साथ अन्याय किए अपनी आजीविका कमाए।
6. **सम्यक व्यायाम :** अज्ञानता को दूर करने के लिए मौलिक प्रयास।
7. **सम्यक स्मृति :** मन की निरंतर जागरूकता और विचारशीलता का आह्वान।
8. **सम्यक चिंतन :** मन को एकाग्र करना तथा अच्छे कार्यों और विचारों के बारे में सोचने के लिए प्रशिक्षित करना।

दस पारमिताएं :

तथागत बुद्ध ने श्रेष्ठ जीवन जीने के लिए दस पारमिताएं बताईं।

1. **दान :** बदले में किसी भी प्रकार की आशा किए बिना दूसरों की भलाई के लिए अपनी संपत्ति को ही नहीं अपने ज्ञान, रक्त और प्राणों तक को दान कर देना।
2. **शील :** नैतिक स्वभाव, बुरा कर्म ना करने की मनोवृत्ति और अच्छे कर्म करने की मनोवृत्ति।
3. **नैष्कर्म्य :** सांसारिक काम-वासना का त्याग।
4. **करुणा :** सभी प्राणियों के प्रति प्रेम-भरी दया भावना।
5. **वीरता :** जो कुछ एक बार करने का निश्चय कर लिया उसे पूरे सामर्थ्य से करने का प्रयास करना।

6. **क्षान्ति** : घृणा कभी घृणा से खत्म नहीं होती। यह केवल मैत्री से ही खत्म होती है।

7. **सत्य** : सत्यवादी होना।

8. **अधिष्ठान** : अपने उद्देश्य तक पहुँचने का दृढ़-संकल्प।

9. **मैत्री** : सभी मनुष्यों और प्राणियों के प्रति भ्रातृत्व-भावना रखना।

10. **उपेक्षा** : यह चित्त की अवस्था है, जिसमें प्रिय-अप्रिय कुछ नहीं है फल कुछ भी हो उससे निरपेक्ष रहना और लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना ही उपेक्षा है।

बौद्ध दर्शन:

1. **प्रतीत्यसमुत्पाद** : संसार में जितनी भी घटनाएं होती हैं, उनके पीछे कोई ना कोई कारण अवश्य होता है। कोई भी चीज स्वतंत्र रूप में या अलगाव में मौजूद नहीं होती। इनमें कार्य-कारण संबंध होता है।

2. **अनित्य का सिद्धान्त** : संसार में सभी चीजें अनित्य हैं, अर्थात् परिवर्तनशील हैं। कोई भी चीज स्थिर नहीं है, सब कुछ बदल रहा है। यह परिवर्तन हमेशा चलता रहता है।

तथागत बुद्ध की स्थापना है कि बौद्ध धम्म का आत्मा-परमात्मा से कुछ लेना-देना नहीं है। उनके बौद्ध धम्म का केंद्र बिन्दु इंसान है और इस पृथ्वी पर रहते समय इंसान का इंसान के प्रति ही कर्तव्य होना चाहिए। उनकी स्थापना है कि इंसान दुखी है, कष्ट में है। संसार दुखों से भरा पड़ा है और धम्म का उद्देश्य इस दुख का नाश करना ही है। अज्ञानता का नाश करके ही दुख के नाश का मार्ग निकलता है। इंसान बौद्ध धम्म के अनुसार पंचशील, अष्टांगिक मार्ग व दस पारमिताओं का पालन करे तो सभी दुखों का अंत कर सकता है।

बुद्ध एक महान समाज वैज्ञानिक: तथागत बुद्ध ने कहा कि हर चीज का परीक्षण और पुनः परीक्षण होते रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि हर किसी को स्वतन्त्रता है कि वह प्रश्न पूछे, परीक्षण करे और देखे कि धम्म सन्मार्ग है या नहीं। उनका कहना था कि किसी बात को केवल इसलिए मत मानो कि वह तुम्हारे सुनने में आई है। किसी बात को केवल इसलिए मत मानो कि बहुत से लोग उसके समर्थक हैं। किसी बात को केवल इसलिए मत मानो कि वह धर्मग्रन्थों, शास्त्रों में लिखी है। किसी बात को केवल इसलिए मत मानो कि वह ऊपरी तौर पर मान्य और सच्ची लगती है। किसी बात को केवल इसलिए मत मानो कि वह आदरणीय आचार्य द्वारा कही गई है। बल्कि, उस बात को मानो जो अनुभव और तर्क पर आधारित हो और सबके लिए कल्याणकारी हो। शिष्य अनाथपिण्डक को संबोधित करते हुए तथागत ने संसार की उत्पत्ति व विकास के विषय में कहा कि संसार में जो भी चीजें अस्तित्व में आती हैं वे ना ईश्वर द्वारा निर्मित हैं और ना ही आत्मा द्वारा। वास्तव में संसार का विकास हुआ है, निर्माण नहीं। यह निरंतर चलने वाली प्राकृतिक प्रक्रिया है। इस लिए हमें ईश्वर और उससे प्रार्थना करने संबंधी मिथ्या धारणाओं को त्याग देना चाहिए। हम व्यर्थ की काल्पनिक उड़ानों में ना उलझे रहें। हम आत्मा और उसके अर्थ से मुक्त हों। हम अच्छे (कुशल) कर्म करें ताकि उसका परिणाम भी अच्छा हो।

बुद्ध ने पूर्व-जन्म के सिद्धान्त को नकार दिया। पूर्व-जन्म का सिद्धान्त बड़ा ही खतरनाक सिद्धान्त है। यदि कर्म की यह व्याख्या स्वीकार कर ली जाए तो मानव प्रयास के लिए कहीं कुछ संभावना नहीं रहती। पूर्व-जन्म के कर्म से ही सब कुछ निश्चित रहता है। इस सिद्धान्त के अधीन लोग एक भयानक षड्यंत्र का शिकार

बन गए। बुद्ध ने पूर्व-जन्म के इस मन गढ़त काल्पनिक षड्यंत्र को मानव का परम विरोधी बताया।

तथागत बुद्ध के अनुसार धम्म की धुरी ईश्वर और इंसान का संबंध नहीं है, बल्कि इंसान से इंसान का संबंध है। बुद्ध ने कहा कि ईश्वर विश्वास बड़ी खतरनाक बात है, क्योंकि ईश्वर विश्वास ही प्रार्थना और पूजा की सामर्थ्य में विश्वास का उत्पादक है। प्रार्थना और पूजा कराने की ज़रूरत ने पुरोहित को जन्म दिया। पुरोहित ही वह शरारती दिमाग था जिसने अंधविश्वास को जन्म दिया और सम्यक दृष्टि के मार्ग को अवरुद्ध कर दिया।

समतावादी बुद्ध : बुद्ध ने वर्ण-व्यवस्था को सिरे से खारिज किया। इतिहास में पहली बार तथागत बुद्ध ने मनुष्यों के बीच ऊंच-नीच का भेदभाव समाप्त किया। उनका मत था कि सभी इंसान एक ही तरह से पैदा होते हैं। सभी का पालन-पोषण भी माँ के द्वारा किया जाता है। सभी शारीरिक रूप से एक समान हैं। जन्म और वंश से कोई इंसान ना ही ऊँचा होता है और ना ही नीचा होता है। तथागत के धम्म के ज्ञान से प्रभावित होकर अनेक राजाओं, व्यापारियों, गृहपतियों, ग्रामीणों, और विद्वानों ने बौद्ध धम्म ग्रहण किया। आज विश्व के अनेक देश बौद्ध धम्म के मार्ग पर चलकर अपने ज्ञान विज्ञान से निरंतर प्रगति करते हुए आगे बढ़ रहे हैं।

स्त्री को अधिकार : बुद्ध ने स्त्री की स्थिति में सुधार किया। बुद्ध ने कभी भी स्त्री और पुरुष में भेद नहीं किया। उन्होंने सभी स्त्रियों और पुरुषों को अपने धम्म में स्थान दिया और प्रतिष्ठा प्रदान की। उन्होंने महिलाओं के लिए धम्म में पूर्ण भागीदारी बढ़ाने और उनकी सामाजिक और धार्मिक स्थिति को बढ़ाने के लिए एक भिक्षुणी संघ का गठन किया। बुद्ध ने नैतिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप से स्त्रियों और पुरुषों की समानता को आगे बढ़ाने के लिए बहुत प्रयास किए। इन अर्थों में वे एक महान सामाजिक क्रांतिकारी थे। बौद्ध धम्म में रहकर एक स्त्री भिक्षुणी बनकर निर्वाण प्राप्ति हेतु साधना कर सकती थी।

बौद्ध धम्म बहुत ही व्यावहारिक है: बौद्ध धम्म गरीबी की प्रशंसा नहीं करता। यह बताता है कि गरीबी से दुख मिलता है। गरीबी से तिरस्कार मिलता है। गरीबी से कष्ट मिलता है। गरीबी से क्लेश मिलता है। इस लिए बुद्ध ने गृहस्थों के समृद्ध होने का स्वागत किया। अपनी परिस्थिति की ओर से उपेक्षावान होकर पड़े-पड़े कष्ट सहते रहने के उपदेश के स्थान पर उन्होंने मेहनत और उत्साहपूर्वक परिस्थिति को बदलने का आदेश दिया। इसी प्रकार बुद्ध की 'अहिंसा' भी हमें बुजदिल और डरपोक बने रहकर अपनी रक्षा से विमुख नहीं करती। जो दंडनीय हैं उन्हें दंड मिलना ही चाहिए। बुराई से भलाई की रक्षा करने के लिए कहीं-कहीं बल का भी आश्रय लेना पड़ सकता है। उन्होंने अपने भिक्षुओं तक से कहा था "जहां शील को खतरा हो, संघर्ष से मत घबराओ। ऐसे समय भीगी बिल्ली बने मत बैठे रहो।"

बुद्ध ने अंधविश्वास, तृष्णा, अहंकार, राग-द्वेष और लोभ से मुक्त होने के लिए चार महान सत्य, त्रि-शरण, पंचशील, अष्टांगिक मार्ग और दस पारमिताओं का मार्ग दिखाया। ईश्वर की जगह नैतिकता को स्थापित किया। सबके मंगल के लिए धम्म स्थापित किया। वे दुनिया के एक महान कल्याणकारी तथा प्रभावशाली इंसान थे।

बुद्ध की शिक्षाओं पर चलकर सम्राट अशोक एक महान राजा सिद्ध हुए। अशोक बुद्ध की शिक्षाओं से इतने प्रभावित थे कि विश्व के अनेक देशों में इनके प्रचार-प्रसार के लिए दूत भेजे। उन्होंने स्वयं भी बुद्ध की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार

किया तथा अपने पुत्र और पुत्री को भी इस कार्य के लिए दूसरे देशों में भेजा। जिन देशों में बौद्ध धम्म गया वे प्रगति में आज सबसे आगे हैं। पूर्वी एशिया के देश इसके उदाहरण हैं। आज विश्व में भारत का जो भी सम्मान व आदर होता है, उसका श्रेय तथागत बुद्ध को जाता है।

महापरिनिर्वाण: कुशीनगर में तथागत बुद्ध का पूर्ण सजग व सचेतन अवस्था में महापरिनिर्वाण हुआ था। वे 80 वर्ष की परिपक्व अवस्था तक पहुंचे थे। तथागत बुद्ध को 35 वर्ष की उम्र में ज्ञान की प्राप्ति हुई। तब से लेकर 80 वर्ष की आयु तक वे बिना रुके धम्म प्रचार करते रहे। अंतिम अवस्था में भी उन्होंने शरीर की ज्यादा चिंता करने की बजाय सत्य के लिए प्रयत्न करने की बात कही। जो पैदा होता है उसे जाना होता ही है। शरीर को जाना ही था। 80 वर्ष की उम्र में बैशाख पूर्णिमा को 483 ईसा पूर्व में तथागत का महापरिनिर्वाण हुआ। महापरिनिर्वाण से पूर्व तथागत से जब शिष्य आनंद ने धम्म के उत्तराधिकारी के विषय में मार्ग दर्शन के लिए कहा तो उनका उत्तर था- 'अत्तदीपो विहरथ अत्त सरणा' (अपना दीपक आप स्वयं बनकर विहार करें) यही बुद्ध का अंतिम वाक्य व उपदेश था।

बाबा साहब डॉ. भीम राव अंबेडकर असाधारण अध्ययनकर्ता व विश्लेषण कर्ता थे। अपने लंबे और गहन अध्ययन के बाद बाबा साहब ने 'बुद्ध और उनका धम्म' पुस्तक लिखी। उन्होंने बताया कि भारत भूमि पर पैदा हुआ बौद्ध धम्म ही मानवता का सच्चा धम्म अर्थात् सद्धम्म है। बौद्ध धम्म करुणा, मैत्री और प्रज्ञा (बुद्धि) पर आधारित है। इससे ही व्यक्ति ज्ञानवान, शीलवान और तर्कशील हो सकता है। ऐसे व्यक्तियों से ही समतामूलक और कल्याणकारी समाज की स्थापना की जा सकती है। मनुष्य केवल अपने प्रयत्नों से ही अपना और समाज का उद्धार कर सकता है।

बाबा साहब डॉ. भीम राव अंबेडकर भारत के संविधान के जनक और लोकतन्त्र के प्रणेता थे। वे बौद्ध धम्म को लोकतान्त्रिक धम्म मानते थे। इससे प्रभावित होकर ही उन्होंने भारत के संविधान की प्रस्तावना में स्वतन्त्रता, समानता और बंधुत्व बौद्ध दर्शन से लिए। बाबा साहब ने कहा भी है कि भारतीय संविधान बुद्ध की शिक्षाओं पर आधारित है। बाबा साहब ने 14 अक्टूबर, 1956 को लाखों लोगों के साथ अपने मूल बौद्ध धम्म में वापसी करके एक क्रांति की शुरुआत की। आओ! हम सभी तथागत बुद्ध के कल्याणकारी मार्ग पर चलने का प्रयास करें।

नमो बुद्धाय
भवतु सब्ब मंगलम



अत्त दीपो भव

SOCIAL ACTION GROUPS FOR AMBEDKARITE REFORM (SAGAR)

Office : 106, Sector-21B, Faridabad, Haryana

Ph.: 9354818711, 9468363773, 9416437533